# हिंदी साहित्य विविध विमर्श

संपादक:

प्रा. रवीन्द्र ठाकरे

डॉ. रघुनाथ वाकले


Scanned with OKEN Scanner

**ISBN : 978-93-91458-72-0**

**Copyright** © Reserved

**प्रथम संस्करण : 2023**

**मूल्य : ₹ 1100/-**

| | |
|---|---|
| शीर्षक | Title |
| **समकालीन हिन्दी भाषा और साहित्य : विविध आयाम** | **Samkaleen Hindi Bhasha aur Sahitya : Vividh Aayam** |
| संपादक | Editor |
| **डॉ. महानंदा पाटील** | **Dr. Mahananda Patil** |
| प्रकाशक | Publisher |
| **आर.के. पब्लिकेशन** | **R. K. Publication** |
| 1/12, पारस दूबे सोसायटी, ओवरी पाडा, एस.वी.रोड, दहिसर (पूर्व), मुम्बई - 400 068 | 1/12, Paras Dubey Society, Ovari Pada, S. V. Road, Dahisar-East, Mumbai - 400 068 |

Phone : 9022 521190 / 9821251190

E-mail : publicationrk@gmail.com

Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : राजेन्द्र मिश्र

virar.mishra63@gmail.com

आवरण : सुनील निंबरे, विद्या उम्मर्जी

मुद्रक : सुमन ग्राफिक्स, मुम्बई - 400011

Scanned with OKEN Scanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| | पर्यावरण चिंतन | देशमुख | |
| 43. | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कहानी साहित्य में वृद्ध की स्थिति | प्रा. डॉ. अरुण नागोराव मुंडे | 327 |
| 44. | हिंदी काव्य साहित्य : पर्यावरण विमर्श | प्रा. दिपाली तांबे | 334 |
| 45. | समकालीन हिंदी कविताओं में पर्यावरण विमर्श | प्रा. राहुल जयसिंग बहोत | 339 |
| 46. | हिंदी साहित्य के उपन्यासो में वृद्धों की समस्या | प्रा. टी एस सांगळे | 346 |
| 47. | हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श | प्रा. बी.एल. शेलार | 359 |
| 48. | भालचंद्र जोशी के कथा साहित्य में पर्यावरण-विमर्श | जुईली सुनील कुलकर्णी | 361 |
| 49. | प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य में चित्रित भारतीय किसान विमर्श | प्रा. थोरात जितेंद्र सुदाम | 367 |
| 50. | हिंदी नाटक और साहित्य में पर्यावरण | प्रा. योगिता भदाणे | 374 |
| 51. | समकालीन उपन्यासों में पर्यावरणीय विमर्श | नलिनाबेन डाहयाभाई आहिर | 384 |
| 52. | केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में पर्यावरण चेतना | प्रा हर्षल गोरख बच्छाव<br>डॉ. अनिता नेरे | 390 |
| 53. | नासिरा शर्मा के उपन्यास 'कुइयाँजान' में चित्रित पर्यावरणीय यथार्थ | प्रा. बापू नानासाहेब शेळके | 398 |
| 54. | डॉ. बृजेश सिंह की ग़ज़लों में मृदा विमर्श | प्रा. रविंद्र पुंजाराम ठाकरे | 409 |
| 55. | 'गिलिगडु 'उपन्यास में अभिव्यक्त वृद्ध विमर्श | डॉ. मनिषा प्रभाकर नाठे | 417 |
| 56. | हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों में पर्यावरण बोध | पूनम सुभाष खैरे | 422 |




Scanned with OKEN Scanner

# 45

# समकालीन हिंदी कविताओं में पर्यावरण विमर्श

**प्रा.राहुल जयसिंग बहोत**
म.वि.प्र. समाज संचालित
कला,वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
मनमाड.तह-नांदगाव (नासिक)

वर्तमान समय में मनुष्य सबसे अधिक यदि किसी समस्या से जुझ रहा है तो वह 'पर्यावरण असंतुलन'I विश्व के सभी देशो में पर्यावरणीय विमर्श यह एक चिंता तथा चिंतन का विषय बन गया है I इस पर्यावरण असंतुलन को कम करने के लिए अब सामाजिक,राजनीतिक क्षेत्र के साथ-साथ साहित्य ने भी अपना दायित्व प्रस्थापित किया है I हिंदी साहित्य में युगीन चेतना या विमर्श के रुप में पर्यावरण पर चिंतन हो रहा है। हिंदी साहित्य में प्रारंभिक काल से कावियो ने प्रकृति को अपने काव्य में निरुपित किया है । हिंदी काव्य नित्य समय से पर्यावरण तथा प्रकृति पर केंद्रित रहा है। प्रत्येक युग में साहित्यकारों ने अपने साहित्य में प्रकृति का वर्णन किया है। कवियों के काव्य की आत्मा हम प्राकृतिक सौंदर्य में देखते है। उनके काव्य के सौंदर्य में प्राकृतिक उपमाएँ रेखांकित कि गई है वह अप्रतिम है। परंतु उस समय कावियो द्वारा किया गाय प्राकृतिक चित्रण मनुष्य के भावाभिव्याक्ती को रेखांकित करते हुए किया जाता था किंतु आज परिस्थिती ने भीषण मोड ले लिया है जिसके कारण इसी प्रकृति का मनुष्य द्वारा किया गया हनन यह सभी जीव, जंतु एवं मानव के लिए भविष्य का संकेत है। मनुष्य के भोगवादी प्रवृत्ति ने आज प्रकृति के संतुलन को खतरे में डाल दिया है। यही कारण है कि हमें अकाल, बाढ, सुखा, तुफान आदि का निरंतर सामना करना पड रहा है। आज समूचा विश्व एक तरफ वैश्विकरण के साथ तरक्की कर रहा है वहीं प्राकृतिक विनाश की घटनायें बढती ही जा रही है। प्रकृति के प्रति चिंता को भी कवियों ने अपने काव्य में वर्णित किया है।



Scanned with OKEN Scanner

'उल्टी प्रार्थना' कविता में भी कवयित्री ने पर्यावरण के उपादान आकाश, चाँदाणी, चाँद, पेड, नदिया, सूक्ष्म प्राणी आदि प्रदूषण के कारण किस तरह विषाक्त बनते जा रहे है इसका सशक्त अंकन किया है -

आकाश को युध्द भूमि में। कल्पित करते ही।
चाँदणी पीली होने लगी। चाँद उदास और निरीह मानों कह रहा हो।
मुझे बचा लो। मुझे बचा लो। पेड पौधों की तरह मुझे मत छेडों।
गंगा, यमुना, गोदावरी आदि। पवित्र नदियों के जल की तरह।
मुझे प्रदूषित मत करो। सूक्ष्म प्राणदायी जल की तरह मुझे विषक्त कर करो।श्2

आधुनिक टेक्नोलॉजी से आकाश में भी युध्द हो रहे है जिससे हमारी आकाश के वातावरण पर भी असर पड रहा है, यहाँ तक की आकाश कह रहा है पृथ्वी पर तो मनुष्य ने पर्यावरण को प्रदूषित किया है कम से कम आकाश को तो सुरक्षित रहने दो। इसी विपदा को वर्तमान समय में तकनीकि के सहयोग से विविध उत्पादनों के निर्माण में रेडियोएक्टिव विकिरण उत्सार्जित होता है और यह पर्यावरण को प्रदूषित करता है। ऋषभ देव शर्मा इसके विरुध्द अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहते है कि -

मनुष्य/मै आकाश हूँ/ कल तक रस था, आनंद था/आज घुटन हूँ संत्रास हूं/ इस का जो स्त्रोत था जिससे धरा थी रसवन्ती/उस में तो घोल दिया तुमने /रेडियम और यूरेनियम/जिस आँधे कुएं में से फूट पडता था/आनंद का पातालतोड फव्वारा/काट डाला तुमने उसकी जडों को रेडियोधर्मी विकिरणों के फावडों और नाभिकीया उर्जा की पलकटी सा।

आज समूचा विश्व ग्लोबल वार्मिंग जैसे शब्द से भलीभाँति परिचित है। धरती का ताप दिन-ब-दिन बढता ही जा रहा है। कवि अरुण कमल ने इस बात को चिंतित किया है-

धुआ रहा है ग्रीष्म
देह का एक-एक रोम अब
खुल रहा है साफ और अलग



Scanned with OKEN Scanner

समकालीन कविताओं में प्रतिशोध का स्वर वर्णित किया है। समकालीन कवियों ने हमारी प्रकृति की हानि को भी कविता के माध्यम से वर्णित किया है। समकालीन कविता यह महामानव और लघुमानव की बहस को समाप्त कर सामान्य मानव केंद्र में रखकर अपने परिवेश को व्यक्त किया गया चिंतन है। समकालीन कवियों ने अपनी कविता में पर्यावरण के बिगडते संतुलन और प्रकृति के नाना रुपों को लेकर उन्हें नये संदर्भों के बीच रखकर अभिव्यक्ति के दूरगामी परिणामों के प्रति चिंता व्यक्त की है।

हिंदी साहित्य में प्रारंभ से ही प्रकृति के अनावश्यक दोहन का विरोध हुआ है। साहित्य में भक्तिकाल के कवियों जैसे - कबीर, रहीम, गुरुनानक, रविदास, जायसी आदि रीतिकाल के कवि बिहारी, देव, पद्माकर, सेनापति, आधुनिक काल में आ. रामचंद्र शुक्ल, आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, छायावादी काव्य में भी प्रकृति के सूक्ष्म व उत्कृष्ट रुपों का वर्णन मिलता है। महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद और सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला,चंद्रकांत देवतले,सर्वेश्वरदयाल सक्सेना,उदयप्रकाश इन सभी कवियों ने प्रकृति का इतने मुग्धकारी वर्णन किया है कि इसे हम आत्मानुभूति के द्वारा प्रेरणा मिलती है।

समकालीन कविताओं में हम प्राकृतिक चिंतन बडे ही सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया है। वैज्ञानिक प्रगति के कारण औद्योगिक क्षेत्र में जंगल कटाई, हवा, पानी, ध्वनि प्रदुषण हो रहा है। जहरीला पानी नदी को, हवा वातावरण को प्रदुषीत कर मनुष्य ही नही पानी में रहनेवाले जीव, पक्षी, जानवर पर भी इसका असर हो रहा है। कवियित्री स्नेहमयी चौधरी ने 'तालाब' इस कविता में तालाब का वर्णन किया है -

एक झील थी , जिस पर कोई जमीं थी। कीचड भी था।
पारदर्शी पानी लुप्त हो गया था। सूरज का प्रकाश बुझ गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची:


1. स्नेहमयी चौधरी, चौतरफा लडाई, पृ. 10
2. स्नेहमयी चौधरी, चौतरफा लडाई, पृ. 99
3. ऋषभ देव शर्मा, मैं आकाश बोल रहा हूँ , पृ. 57
4. जजचरूध्धंअीपअलंःाजपण्सपमिण्
5. जितेंद्र जलज, ऐसा क्यों, वागर्थ, अक्टूबर 2016 पृ. 82
6. राजेश जोशी, मिट्टी का चेहरा, पृ. 24
7. सम्पा. अलका गडकरी, समकालीन हिंदी कविता: विविध विमर्श, पृ. 198-199


Scanned with OKEN Scanner

नभ इतना खुला और फैलता हुआ
सूरज के डूबने के बाद भीश्4

उपरोक्त पंक्तियाँ यह वातारण प्रदुषण की ओर हमें सुचना दे रही है की आज हमारे वैज्ञानिक अविष्कारों तथा जरुरतों के कारण हमने वातारण के ओझोन स्तर को भी नही छोडा। आज जिस खुले आसमान के तले हम सांस ले रहे है अगर वही प्रदूषित हो तो हम धीरे धीरे मनुष्यता तथा पूरे विश्व के साथ खिलवाड कर रहे है। अगर जल्द ही मनुष्य ने समझदारी के साथ काम नही लिया तो पृथ्वी नष्ट होने के कगार पर है।

इस प्रकृति का महत्वपूर्ण घटक है हमारी धरती जो हमें जीवित रहने के लिए हर एक सुविधा तथा सहुलियत प्रदान की है तो अब आज हमारे द्वारा इसके अति दोहन के कारण यह अपने अस्वस्थ रुप में हमारे सामने है। तो अब हमें इसे पूर्ण रुप से स्वस्थ बनाने हेतु कारगर तथा ठोस प्रयास प्रारंभ कर देने चाहिए।

श्जब जब जो जो चाहा/
जो जो मांगा/
धरती ने कभी हाथों को/
संकुचित नही किया, फिर ऐसा क्यों? कि हम/
अब दे नही सकते धरती को/
चिरायु के लिए, प्रदूषण मुक्त पर्यावरण?

कवि जितेन्द्र जलज जी ने प्रकृति के उपादानों के भोगी हम मनुष्य के पर्यावरण बचाने के प्रति हमारे कर्तव्यों को याद दिलाया है।

कवि राजेश जोशी ने 'उनके स्वप्न में जाने का वृतांत' कविता में पॉलिथिन बॅग से हो रहे समुद्र प्रदुषण को कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है -

पालिथिन की विशाल थैली में मैंने समुद्र को भर लिया।
आप अंदाजा भी नही कर सकते।
कि कैसे तकलीफ देह बात थी यह। समुद्र के लिए।



Scanned with OKEN Scanner

आज ग्लोबल मार्केटिंग के बाजार से कोई भी मुक्त नही रह सका। आज तकनीकी व्यापकता और सर्वव्यापी बाजार व्यवस्था में जल, जमीन, जंगल और पर्यावरण, संस्कृति संबंधी मामलों में पहल कर रहे है, लेकिन यह प्राकृतिक संपदा को क्रय किया जा रहा है-

बाजार में सब कुछ बिकाऊ है
बिकाऊ है हमारी मूल्यवान खनिज संपदा
बनौषधियाँ और दुर्लभ बगीचे
बिकाऊ है हमारा स्वाभिमान
हमारी मान्यताएँ, हमारी कार्य संस्कृति
हमारा लज्जा भाव, हमारी सामूहिक चेतना।

प्रस्तुत पंक्तियाँ यह हमे बाजारीकरण के दुष्परिणामों की ओर सुचित करते हुए प्रकृति का हनन याने मनुष्यता का हनन है जो हमारे अस्तित्व, चेतना को ललकारकर हमें चेतवनी देता है। जिस तेजी से हम अपनी प्रकृति को अपने फायदे के लिए मनचाहा व्यवहार कर रहे है भविष्य में इसके भयंकर परिणाम मनुष्य को भुगतने पडेंगे इसका अंदाजा भी हम नही लगा सकेंगे। प्रकृति के हर चीज को लोभी मनुष्योंद्वारा बेचने के सिलसिले से हमारे अंदर की प्रकृति के प्रति जो संवेदनशीलता मिट रही है जिसके परिणाम स्वरुप हम कितने भी नारे लगाए यह हानि होती रहेंगी।

उदय प्रकाश द्वारा रचित "दो हाथियो की लडाई" कविता में कवि ने दो हाथियो की लडाई को दर्शाते हुवे बेवजह दबी कुचली घास के कारण पर्यावरण की हो रही हानी को दर्शाया है। दो हाथियो के माध्यम से पर्यावरण के साथ साथ कई लोगो का नुकसान होते हुवे बताया गया है। पर्यावरण बोध को केंद्र में रखकर लिखी गई कविता में कवि पर्यावरण चेतना की और संकेत करते नजर आते है तथा आगे आनेवाले पीढी को इस बात से अगाह करते हुवे प्रकृति के प्रति मनुष्य का व्यवहार कैसा हो यह सीख हमे देने की चेष्टा करते है।



Scanned with OKEN Scanner

अतः जो भी हो प्रकृति ने हमें जो दिया है हम मनुष्य स्वार्थ के लिए विनाशकारी व्यवहार से प्रकृति को कहर बरसाने को उकसा रहे है। वास्तव में हम जैसा व्यवहार, खिलवाड प्रकृति के साथ करेंगे प्रकृति भी वही हमें वापस भेंट में देती है। तो अब मनुष्य को समझदारी से काम लेते हुए पर्यावरण का खयाल रखना है और आनेवाले भविष्य को सुखकर बनाना है। आज हमें जरुरत पडी है कि प्रकृति में मानवीयता को ढूँढने की। समकालीन काव्य यह पर्यावरण की त्रासदी को व्यक्त करते हुए मनुष्य को संदेश दे रहा है। समकालीन कविता यह भविष्य में अपने परिवेश और प्रकृति में होनेवाले परिवर्तनों तथा उससे जीवन पर पडनेवाले प्रभावों के प्रति चिंता व्यक्त करता है। कवि रामदरश मिश्र पर्यावरण प्रदूषण से हो रहे प्रभाव को अभिव्यक्त करते हुए कहते है-

श्ओह कैसी हवा चल रही है आजकल
कि अमराई के सारे बौर, देखते देखते झुलस जाते है।
बच्चे पैदा होते है विकलांग हो जाते है
अन खाने से पहले ही, अपच करने लगता है
नदियाँ अपना जल लिये दिये। खुद ही प्यासी रह जाती है।
बादल आकर बिना बरसे, जल लिये लौट जाते है।

यह समकालीन कवियों द्वारा किया गया चिंतन यह संपूर्ण पर्यावरण तथा मानवता को बचाने की ओर सुचित करता है। हमारा सामाजिक दायित्व है की हम अपने पर्यावरण के प्रति सच्ची आत्मीयता रखे और आनेवाली पीढि को अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सही सुरक्षित सौंप सके। अंत: कह सकते है कि,प्रकृति मनुष्यो की जरुरतो को पुरा कर सकती है उसकी लालच को नही। क्योंकी वर्तमान में प्राकृतिक संसाधन बहुत ही सीमित मात्रा में शेष है। इस समस्या से अवगत होते हुए यदि हम अभी से सचेत नही हुए तो वह दिन दूर नही जब इस पृथ्वीतल से संपूर्ण गोचर अगोचर प्राणी खत्म हो जाएंगे। मनुष्य को प्रकृति के विभिन्न घटको से वंचित होना पडेगा।



Scanned with OKEN Scanner